आभामंडल

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आभामंडल क्या है? आभामंडल किसे कहते है? आभामंडल कैसे बनता है? इन सब प्रश्नों का विवेचन पुनरुत्थान के इस कार्यक्रम में विवेचनीय है। आभामंडल को ओरा भी कहा जाता है। महापुरुषों के चित्र के पीछे एक रंगीन गोला लगाया जाता है। वह ओरा का एक रूप है। चेतन और जड़ दोनों में यह ओरा होता है। जड़तत्व का ओरा स्थिर रहता है। आत्मा जब शरीर से जुड़ती है तब ओरा बनता है। प्रत्येक प्राणी का अपना आभामंडल होता है, पर वह किसी को दिखाई नहीं देता है। कायोत्सर्ग की गहराई में जाने पर आभामंडल प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने लगता है। लेश्याध्यान रंगों का ध्यान है। माना जाता है कि जैसे लेश्या के रंग होते हैं वैसा ही व्यक्ति का आभामंडल बनता है। लेश्या अच्छी तथा बुरी दोनों ही प्रकार की होती है। आभामंडल शरीर के चारों ओर सूक्ष्म वलय होता है जिसे सामान्य आंखों से नहीं देखा जा सकता है। लेश्याध्यान में रंगों के द्वारा बुरी लेश्या को अच्छी लेश्या में बदला जा सकता है जिससे आभामंडल भी शुद्ध हो जाता है। लेश्याध्यान भाव शुद्धि का प्रयोग है। भाव ही व्यक्ति के व्यवहार का आदि स्रोत है। अतः भाव– शुद्ध होने पर व्यवहार भी शुद्ध होता है। लेश्याध्यान के प्रयोग में संबंधित रंग को चमकता हुआ आभामंडल में काल्पनिक रूप से देखते है। तत्पश्चात् इसे श्वास के साथ शरीर के भीतर लेते है। जिस केन्द्र से रंग का सम्बन्ध होता है, उस केन्द्र से अमुख रंग के प्रकाश को आभामंडल में फैलता हुआ देखते है। इसके बाद भावना की जाती है। लेश्याध्यान में प्रमुख पांच केन्द्र तथा उनके पांच रंग निर्दिष्ट किये गये है। आध्यात्मिक दृष्टि से लेश्याध्यान का प्रयोग भाव– शुद्धि का प्रयोग है। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक रंग की अपनी तरंग दैर्ध्यता होती है तथा प्रत्येक रंग की अपनी प्रकृति होती है। ये तत्व व्यक्तित्व को प्रभावित करते है। रंग–चिकित्सा में भी इन अतःस्रावी ग्रंथियों का सम्बन्ध रंग से होता है जिससे अनेक प्रकार के रोगों का उपचार किया जा सकता है। अतः ग्रंथियों के स्राव को भी रंगों के ध्यान द्वारा संतुलित किया जा सकता है। लेश्या का अर्थ है– विशिष्ट रगंवाले पुद्गल द्रव्य के संसर्ग से उत्पन्न होने वाला जीव का परिणाम या चेतना का स्तर। लेश्या ही सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर के बीच संपर्क–सूत्र है। लेश्या के दो भेद हैं–द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या। पौद्गलिक लेश्या प्राणी के आभामंडल का नियामक तत्त्व है। ओरा में कभी काला, कभी लाल, कभी पीला, कभी नीला, और कभी सफेद रंग उभर आता है। भावों के अनुरूप बदलते रहते हैं। लेश्या के छह प्रकार हैं–कृष्ण, नील, कापोत, तैजस, पद्म और शुक्ल। इनमें प्रथम तीन अशुभ हैं और अन्तिम तीन शुभ हैं। भावधारा के आधार पर आभामंडल बदलता है और लेश्याध्यान के द्वारा आभामंडल को बदलने से भावधारा भी बदल जाती है।

लेश्याध्यान या चमकते हुए रंगों का ध्यान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आभामंडल की व्याख्या रंगात्मक है। जिसमें लेश्या होती है उसका आभामंडल निश्चित रूप से शुभ अशुभ भावों के साथ बदलता है। यह बदलाव अच्छा है या बुरा यह जानने के लिए रंगों की भाषा जानना जरूरी है। रंग मनुष्य के भावों के साथ बदलते रहते है। आभामंडल में होने वाले रंगों की भिन्न–भिन्न प्रकृति होती है। यह रंग मित्रता, प्रेम, स्वास्थ्य और शक्ति का सुनहरा पीला उच्च प्रज्ञा का, नीला आध्यात्मिक और धार्मिक मनोवृत्ति का, नारंगी बुद्धि और न्याय का, हरा सहानुभूति का प्रतीक है। आभामंडल में उभरने वाला स्लेटी भय और ईर्ष्या का, काला अभाव का, तथा सफेद रंग आध्यात्मिक पूर्णता का प्रतीक होता है। आभामंडल में काले रंग की प्रधानता हो तो यह मानना चाहिए कि व्यक्ति का दृष्टिकोण ठीक नहीं है, आकांक्षा प्रबल है, प्रमाद प्रचुर है, कषाय का आवेग प्रबल और प्रकृति अशुभ है, मन वचन और काया का संयम नहीं है, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं है, प्रकृति क्षुद्र है, बिना विचारे काम करता है, अविद्या, हिंसा में प्रवृत्ति इस प्रकार का भावधारा रहती है। आभामंडल में कपोत रंग की प्रधानता रहने पर व्यक्ति में वाणी की वक्रता, आचरण की कुटिलता, अपने दोषों को छिपाने की प्रवृत्ति, दुष्ट वचन बोलना, चोरी करना आदि इस प्रकार की भावधारा और प्रवृत्ति रहती है। आभामंडल में रक्तवर्ण की प्रधानता होने पर व्यक्ति नम्र व्यवहार करने वाला, स्थिर, ऋजु, कुतूहल न करने वाला, विनम्र, जितेन्द्रिय, मानसिक समाधि वाला, धर्म में दृढ़ आस्था करने वाला, मुक्ति की गवेषणा करने वाला और पापभीरु होता है। आभामंडल में पीतवर्ण की प्रधानता होने पर व्यक्ति अल्प क्रोध मान माया और लोभ वाला, प्रशान्त चित्तवाला, समाधिस्थ, अल्पभाषि, जितेन्द्रिय और आत्मसंयम करने वाला होता है। आभामंडल में श्वेतवर्ण की प्रधानता होने पर व्यक्ति प्रशान्त चित्त वाला, जितेन्द्रिय, मन वचन और काया का संयम करने वाला शुद्ध आचरण से सम्पन्न ध्यानलीन और आत्मसंयम करने वाला होता है। असभ्य व्यक्ति के आभामंडल से निकलने वाली विकिरणें धुंधली–पीली, स्लेटी, मिश्रित नीली, धुंधली नारंगी और भूरी लाल रंग की होती है। सभ्य व्यक्ति के आभामंडल में उच्च स्तरीय किरणें होती है। उनके आभामंडल में पीला रंग, शुद्ध लाल रंग और साफ पीला रंग अधिक होता है। संवेगात्मक स्थिति में ओरा काला तथा लाल रंग क्रोध के समय विकिरित होता है। भय की अवस्था में धुंधला स्लेटी रंग होता है। भक्ति के समय नीला रंग निकलता है। अतिमानव का ओरा शानदार तथा सूर्यास्त के रंग जैसा होता है। उनके सिर के चारों और पीले रंग की तेज किरणों का वलय होता है। वर्ण और भाव परस्पर प्रभावक तत्व है। वर्ण की विशदता और अविशदता के आधार पर भावों की प्रशस्तता और अप्रशस्तता निर्मित होती है। हम भावधारा को साक्षात देख नहीं सकते। इसलिए व्यक्ति के आभामंडल में उभरने वाले रंगों को देखकर भावों को जानते है। रंग आंतरिक स्तरों की सच्ची भाषा है। आभामंडल रंगों की भाषा में पहचाना जाता है। सूक्ष्म शरीर से निकलने वाली विकिरणें रंगीन होती है। इन्हीं रंगों के माध्यम से आभामंडल की गुणात्मकता तथा

प्रभावकता जानी जाती है। दो व्यक्तियों का आभामंडल एक जैसा नहीं होता, क्योंकि किसी का भी स्वभाव, विचार और आदतें एक जैसी नहीं हुआ करती। भावलेश्या प्रतिक्षण बदलती रहती है इसलिए आभामंडल भी बदलता रहता है। कृष्ण नील और कापोत रंग प्रधान ओरा मनुष्य की दूषित मनोवृत्तियों को दर्शाता है। तेज पद्म और शुक्ल लेश्या के रंग प्रधान आभामंडल मनुष्य की अच्छी मनोवृत्ति को दर्शाते है। भामंडल और आभामंडल दो शब्द है। अवतारों, तीर्थंकरों और महापुरुषों के चित्रों में सिर के पीछे पीले रंग का गोलाकार चक्र देखने में आता है। यह भामंडल है जो कि विशिष्ट विकसित चेतना में अभिव्यक्त होता है। आभामंडल जड़, चेतन सभी पदार्थों में होता है। पदार्थ और प्राणी के आभामंडल में बहुत अंतर है। पदार्थ का आभामंडल स्थिर भद्दा और निष्क्रिय होता है जबकि प्राणी का आभामंडल भावों में आने वाले बदलावों के साथ प्रतिक्षण बदलता रहता है। आदमी जब दिवंगत होता है तो उस समय स्वाभाविक रूप से उसका आभामंडल भद्दा हो जाता है, क्योंकि आभामंडल आत्मा के प्रकंपनों को प्रतिबिम्बित करता है।